भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-1, अंक-1	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
रविवार, 12 जून' 77	मानद सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥

शिक्षापत्री-116

सर्वे सुखिनः सन्तु.....

स्वामिश्रीजी

सरदारगढ़

ता. 24-5-77

परम भगवदिय,

श्री कृष्ण परमात्मा ने श्रीमद् भागवत् में स्पष्ट कहा है कि मैं यज्ञ,व्रत, तप, दानादि साधनों से जितना प्रसन्न होता हूं, इससे कहीं अधिक प्रसन्न 'सत्संग' से होता हूं। यह सत्संग क्या है? भगवद् स्वरूप निर्मल संत के साथ हार्दिक सम्बन्ध यही सत्संग है।

इस संसार में भी यह तथ्य प्रचलित है कि जीवात्मा का बलाबल 'शब्द' पर आधारित है। संग या सहवास का महत्त्व अत्यन्त है। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामि जी ने अपनी बातों में कहा है कि- यदि जीवात्मा को सच्चे संत का संग हो जाए, तो सौ जन्मों के बाद एकान्तिक होने वाला वह, इस जन्म में ही एकान्तिक हो जाता है और 'संग' ठीक न हो तो इस जन्म में एकान्तिक होने वाले जीवात्मा को सौ जन्म लेने पड़ते हैं। यदि हमें सच्चे संत मिल जाएं तो वे हमें हर प्रकार से सुखी कर ही देते हैं। हमारा सौभाग्य है कि आज हमें ऐसे भगवद् स्वरूप संत परम पूज्य काकाजी, परम पूज्य पप्पाजी मिले हैं। उनकी वाणी का लाभ कथावार्ता के रूप में सहज मिलता रहे इस हेतु से यह पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका द्वारा विशेषरूप से विविध लाभ होंगे।

(1) पूज्य मुकुदंस्वामी जी पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं इसके पीछे यही भावना है कि सबको महान पुरुषों की कथावार्ता का सुन्दर लाभ अपने घर में बैठे-बैठे ही मिले। इसको पढ़ने के बाद यदि हम इन कथावार्ताओं पर मनन और चिंतन करेंगे, तो मन में सच्चा विवेक दृढ़ हो जाएगा। हम क्यों आए हैं? क्या हो रहा है? उसकी स्पष्ट समझ हमारे चित्त में स्थिर हो जायेगी। अपने संसार को प्रभुमय बनाने की जागृति पैदा होगी। परमात्मा के मार्ग पर चलने का बल मिलेगा।

(2) इस 'पत्रिका' में महान पुरुषों के जीवन चरित्र और इनके रहन-सहन का गुणानुवाद होगा, जिससे साधकों को सच्चे सन्त का परिचय होगा। सन्त की महिमा समझ में आएगी और इनके साथ दृढ़ सम्बन्ध होगा। भगवान व्यासजी को तब ही शान्ति मिली थी जब इन्होंने श्रीमद् भागवत् में कृष्ण परमात्मा के गुणानुवाद किए।

श्रीजी महाराज ने वचनामृत कारियाणी-12 में कहा है–'जीवात्मा कैसा भी कामी, क्रोधी, लोभी, लम्पट हो; किन्तु यदि वह भगवान पुरुषोत्तम नारायण की कथावार्ता प्रेम से सुनेगा तो उसके सब विकार नष्ट हो जाएंगे और वह वासना रहित हो जाएगा। वास्तव में यह इनका आशीर्वाद है। इस 'पत्रिका' में भी प्रत्यक्ष धाम, धामी और मुक्तों के गुणानुवाद होंगे। अतः वही लाभ इस 'पत्रिका' द्वारा भी सबको होगा।

(3) 'पत्रिका' में प्रस्तुत सामग्री से महान पुरुषों के हृदयगत अभिप्राय और रहस्य में साधक का प्रवेश होगा और संत को कैसे प्रसन्न किये जाते हैं यह स्पष्ट हो जाएगा।

(4) इस 'पत्रिका' की कथावार्ता के मनन चिन्तन से वचनामृत अंत्य 9 अनुसार साधक को अखण्ड जागृति रहेगी। जहां-जहां अपनी गलती होती होगी वह स्पष्ट दिखाई पड़ेगी, अपने दोषों का दर्शन होगा। अपने दोषों को नष्ट करने का बल मिलेगा। हमारा व्यक्तित्व कब शिथिल होता है? जब हम में अभाव, अवगुण, षडयन्त्र और रजोगुण तथा तमोगुण के भयंकर विकार उत्पन्न होते हैं। यदि हमें इनके साथ लड़ने का बल मिले तो हमारा व्यक्तित्व बलवान हो जाएगा। यह 'बल' इस पत्रिका से मिल सकेगा।

गुरुजी मुकुंदस्वामी, श्री महेन्द्रभाई दवे और श्री विमल भाई दवे के सहकार से पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं इसके पीछे इनकी भावना यह है कि 'सत्संग' का सच्चा विकास हो और सन्त के साथ दिल की प्रीति हो। अतः इस पत्रिका का सदुपयोग करना और पूर्ण सहकार देना; जब कि आगे लिखा इससे सर्वप्रकार से सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त होंगे।

सन्तों को अपना नीजि जीवन होता ही नहीं है। वह तो परार्थ ही जीवन जीते हैं। इनकी हर प्रवृत्ति दूसरे के लिये ही होती है। इस प्रवृत्ति मेंआप सबका सहकार चाहिए, परिणामस्वरूप आप सर्वप्रकार से सुखी होंगे, आपका यह अन्तिम जन्म होगा और आपको स्थायी रूप से परम प्राप्ति और तृप्ति होगी।

लि. सदासेवक

साधु हरिप्रसाद के

हार्दिक जय श्री स्वामिनारायण

संत परम हितकारी.....

मनुष्य मात्र जीवन और जगत में सुख शांति, शक्ति और आनन्द की खोज में लगा हुआ है; किन्तु जैसा कि हम देखते हैं सारा संसार परेशानी में है, उद्वेग में है, अस्वस्थता में है, दुःख में है। मानव के हृदय में शान्ति नहीं है। कंचन, कामिनी और कीर्ति के भंवर में पड़ा हुआ वह अनेक प्रयत्न और सतत पुरुषार्थ के उपरांत भी आज खत्म हो चुका है; हिम्मत हार चुका है। उसे समाधान चाहिए। वास्तव में उसकी बुद्धि का अत्यधिक विकास जरूर हुआ है किन्तु, यह विकास रचनात्मक या सृजनात्मक नहीं बन पाया है। विज्ञान के विकास द्वारा प्राप्त अद्‌भुत सिद्धियां एवं विविध प्रकार की शक्तियों के बावजूद हमारे संसारिक एवं शारीरिक द्वन्द्व और दुःखों का अन्त अभी तक नहीं आया इतना ही नहीं, किन्तु सच तो यह है कि अशान्ति और उद्वेग बढ़ ही रहे हैं। सब यह जानते हैं और स्पष्ट देख रहे हैं। संस्कृति की बातें बढ़ रही है हैं, लेकिन संस्कृति की आधारशिला-मनुष्य के संस्कार ही अदृश्य हो रहे हैं। विद्या बढ़ी है, किन्तु उसके प्राणरूप विनय और विवेक नष्ट हो चुके हैं। कोई-कोई भक्ति भी करते हैं, किन्तु प्रारब्ध और प्रकृति से वे मुक्तनहीं हो पाये। अनेक लोग साधना, भक्ति और तपश्चर्या द्वारा परमात्मा को प्राप्त करने में लगे हुए हैं, किन्तु सही मार्गदर्शन के अभाव में इनको भी शान्ति नहीं है।

इस प्रकार समाज और विश्व की ओर देखते ही स्पष्टरूप से दिखाई पढ़ता है कि प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह त्यागी हो या गृहस्थी, तन-मन-धन और जीवगत चार प्रकार की वेदनाओं से असहय दुःख में है। उसके जीवन में दुःखों का तूफान उमड़ रहा है। प्रश्न है कि-है कोई ऐसा उपाय जिससे हमारे जीवन में शान्ति का प्रवर्तन हो? हमारा दिल और दिमाग प्रसन्न हो? है कोई ऐसा उपाय जो हृदयसरिता के मलिन किनारे को, मन के दूषित प्रवाहों को, असत् संकल्पों को, विषमय संस्कारों को परिवर्तित कर के सुगन्धपूर्ण बना सके; पुनर्जीवित कर सके? हमारे हृदय में प्रेममयी भावना का संचार कर सके, जिस से कश्मीर की हरियाली की तरह हमारा जीवन सदा-सर्वथा सुवासित बने? हज़ारो वर्षों की तपश्चर्या से ऋषि-मुनि थक गये और साधनों का अन्त आया; किन्तु, वह निर्वासनिक अवस्था और स्वभावरहित जीवन की कल्पना भी आज तक किसी को नहीं आई है। स्वामी रामतीर्थ के सेवक स्वामी ब्रह्मानंदजी को अपनी चालीस साल की आयु में शादी करने की इच्छा हुई ! महात्माजी और विनोवाजी बीस-बीस साल की तपस्या के बाद भी उस उन्नत मनःस्थिति की केवल कल्पना ही कर सकते थे !! अतः प्रश्न यह है कि वैज्ञानिक विकास के इस युग में वैभव पूर्ण मानव को न केवल इसी जन्म में ही बल्कि दो-तीन साल में इन्द्रियों एवं अंतःकरण का शुद्धिकरण प्राप्त हो ऐसा कोई सरल उपाय है?

हां, है–'सन्तसमागम।' कितना भी पुरुषार्थ करो किन्तु जब तक ऐसे कोई परमपवित्र पुरुष के साथ अन्तरतम सम्बन्ध नहीं होता तब तक हमारे चैतन्य का विकास नहीं हो सकता। जैसे की दो मिनट भी अगर हमारा संसर्ग हवा से छूट जायेगा तो श्वांस रुद्ध हो जाता है, वैसे ही 'सन्तसमागम' बिना हमारा चैतन्य रुद्ध हुआ है और रुद्ध ही रहेगा। सन्त एक ऐसी भूमिका पर स्थित है–

– जिनके एक ही संकल्प से जीवन में विवेक, विनय और मर्यादा प्रविष्ट होते हैं,

– जिनके एक ही संकल्प से हृदय प्रशांत होता है,

– जिनके एक ही संकल्प से वृत्तियों के विलास की पूर्णाहुति होती है,

– जिनके एक ही संकल्प से जड़ चेतन बनता है,

– जिनके एक ही संकल्प से लूटेरा संत बनता है,

– जिनके एक ही संकल्प से वेश्या पवित्र बनती है,

– जिनके दर्शन प्रभु दर्शन तुल्य है,

– जिनकी सेवा साक्षात् प्रभु की सेवा है।

– और जिनके समागम मेंआने से मोक्ष का द्वार खुल जाता है।

सत्पुरुष सृष्टि का आधार है। लोककल्याण का दीपक है। लोकोपकारक है। सन्त का जीवन ही लोककल्याण के लिये है। संसार पर इनके समान उपकार किसी का नहीं है। इसीलिए डॉ. राधाकृष्णन् ने कहा था कि आज अगर हम जी सकते हैं इसका कारण वैज्ञानिक सिद्धियां नहीं हैं, किन्तु समाज में विचरण करनेवाले, साधु पुरुष ही है, जिन्होंने समाज को उन्नत बनाया है।

प्रत्येक युग में प्रत्येक जाति किसी न किसी सन्त के

साथ अटूट जुड़ी दिखाई पड़ती है। न केवल पूर्व में, किन्तु पश्चिम में भी सन्तों का यह योगदान रहा है। भारत में जब सारी प्रजा और राजा सन्तों का सम्मान करती थी-इनकी ओर श्रद्धा और सम्मान से देखती थी, इनकी आज्ञा का अनुसरण करती थी, तब यह देश महान था। राजागण सन्तों का राजगुरु के रूप में स्वीकार करके, इनके आशीर्वाद और सुझाव के अनुसार राज्य चलाते थे। विद्वद्गण सन्त के सामने झुकते थे। श्रेष्ठिगण सन्त को भगवत्सम्पत्ति के सामने अपनी धन-सम्पत्ति को तुच्छ मानते थे। आज भी प्रत्येक भारतीय अपने आपको किसी न किसी प्राचीन महर्षि की सन्तति मानते हैं और प्रत्येक धार्मिक कार्यों में अपने गोत्र और पूर्वज ऋषि का स्मरण करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि बिना सन्त की पृथ्वी की कल्पना ही नहीं हो सकती ! और मानवजाति के दिल पर आधिपत्य सिकन्दर, नेपोलियन, हिटलर, मुसोलिनी की हिंसावृत्ति का नहीं, इनके अपूर्वबल और महत्वाकांक्षाओं का नहीं, इनकी तलवार और तोपों का नहीं, किन्तु जगत्कल्याण के प्रति क्रास पर चढ़ने वाले ईसा मसीह जैसे महात्माओं के शब्दों का है। शिवाजी जैसे वीर को प्रेरणा देने वाले थे समर्थ स्वामी रामदास। ज्होन ऑव आर्क की शक्ति का स्रोत सेन्ट माईकल और सेन्ट केथेरिन का उपदेश था। गुरु गोविन्द सिंह की शक्ति गुरु नानक थे। सम्राट अशोक पर भगवान् बुद्ध के उपदेश का प्रभाव था। इसके अतिरिक्त अन्यान्य संप्रदायों में भी सन्त की महिमा का बार-बार गान किया गया है। कुराने शरीफ में 'मारफती' पुरुष का वर्णन है ही। जैन फिलासफी कर्मवाद के प्रति झुकी किन्तु महावीर प्रभु के नवकारमंत्र 'ओ३म् नमो अरिहंताणं' का अर्थ करते हैं, तब स्पष्ट होता है कि नमो 'अरिहंत' अर्थात् अंतःस्थ अरि - आसुरीवृत्तियों का नाश करके अपने हृदय में जिन्होंने परमात्मा का साम्राज्य स्थापित किया है और यह साम्राज्य सबमें बांटने की जिनमें क्षमता है ऐसे परमपवित्र पुरुष को नमन किया है। इस प्रकार भगवान महावीर ने संत प्रणाली की एक सुंदरतम भावना की ओर निर्देश किया है। श्रीमद् रामचन्द्र जी ने भी ऐसी एक संतप्रणाली की ओर निर्देश करते हुए दो प्रश्न रखे हैं-

(1) हमारी अविद्या और अहम्-जन्य भ्रांति कौन नष्ट करेगा?

(2) हमारा 'अहम्' का लय कराके हमें शून्यावस्था में ले जाकर परमात्मा के साथ हमारा संबंध कौन सुदृढ़ करायेगा?

इसका उत्तर भी उन्होंने ही स्वयं दिया है कि भगवान के दूत के समान एक निर्मल पुरुष की आवश्यकता है। ईसा मसीह ने भी सेन्ट पीटर को कहा था कि यदि आपको सच्चा सुख प्राप्त करना हो तो आप सब इकट्ठे हो कर आइए। भगवान का दूत मैं आप सब पर कृपा करूंगा। जिसके परिणामस्वरूप आप में सच्चा बुद्धियोग का उदय होगा और आप सुखी रहेंगे। संत तुलसीदास जी ने भी रामायण में लिखा है-

'तुलसी संगत शोध ले राम जिन्हों के पास।'

स्वामिनारायण भगवान ने भी अतिशय कृपा करके अपने 'वचनामृत' ग्रंथ के हर पृष्ठ पर संत महिमा का ही गान किया है। हमारे कोटि-कोटि वंदन हो स्वामी सहजानंद जी को कि जिन्होंने मानवजाति के कल्याण के लिये पवित्र भावना युक्त परम भागवत् साधुओं की ज्योति पृथ्वी पर अखण्डित रख दी और अनाथ जीवात्मा को सदा सनाथ बना दिया। हमारी अज्ञान अवस्था का प्रलय कराने हेतु ज्ञानस्वरूप ज्योतिर्मय-मंगलमय विभूतियों का एक अखण्डित सहारा दिया। परिमास्वरूप जीवात्मा को ऐसा सारथी मिला, अपने जीवन का ऐसा सारथी मिला कि जो इस बंधन से मुक्त करके अखण्ड प्रभुमय रखने की क्षमता से पूर्ण है। इनकी हमारे लिये बहुत बड़ी विरासत है !

जिसकी दशेन्द्रियां और चार अन्तःकरण अखण्ड प्रभुमय हो-जिसके हृदय में स्त्री, धन और मान-कंचन, कामिनी और कीर्ति का संकल्प न हो, भाव न हो, रस न हो किन्तु केवल परमात्मा का ही रस हो, जिसकी हर क्रिया खाने-पीने-बोलने चलनेआदि में परमात्मा की ही अभिव्यक्ति होती हो, ऐसे पुरुष के दर्शन पृथ्वी पर होना असंभव है। इस असंभावित को स्वामिनारायण भगवान ने संभव कर दिया। ऐसे भगवत्स्वरूप संतों की परम्परा इस पृथ्वी पर अखण्डित कर दी कि-

– जिन का शाप भी अनुग्रहरूप हो,

– जो कोटि जन्मों के हमारे पाप-हमारी प्रकृति-हमारे स्वभाव को नजर में न लेते हुए माधुर्य का रसपान ही करवाते रहते हो,

– अनंत ब्रह्मांड के समुद्र का जल शायद सूख जाए,

लेकिन जिनका प्रेम त्रिकाल में कभी भी न सूखे।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी जी ने स्पष्ट घोषित किया है कि जो कार्य कोटि कल्पों की साधना द्वारा भी सिद्ध नहीं हो पाता, वह कार्य ऐसे संत द्वारा आज की वैज्ञानिक प्रगति के ढंग एक ही दिन में संभव है। ऐसी भक्ति, ऐसा सामार्थ्य, ऐसा ऐश्वर्य, ऐसा सुख हर जीवात्मा को देने की रुचि सहजानंदस्वामी जी ने रखी। और..... इस हेतु देह में रहते हुए जिन की दशा देहातीत हो-जिन का अहम् प्रभु में विसर्जित हुआ हो, ऐसे गुणातीत भावना युक्त पुरुषों द्वारा उन्होंने अपनी प्रभुता पृथ्वी पर अखण्डित रखी। और... हमारे अहंकार का विसर्जन कराने-हमारी अस्मिता का प्रलय कराने धर्मकुल की आकाशगंगा के तेजस्वी तारक समान उन निर्मल संतों ने अत्यंत नम्रता से दीनभाव से - सेवकभाव से - गुलामभाव से - जीवन जी के एक अतिसमर्थ के जीवन की प्रतिभा का सुन्दरतम दर्शन कराया है। परिणाम रूप किसी भी प्रकार के जीवात्मा को सहज ही सद्भाव हो जाता है कि ये पुरुष - ये स्वामी ऐसी विनम्रता से व्यवहार करते हैं, मैं नहीं कर पाता !! इस प्रकार इसके हृदय में संत के प्रति परिताप जन्य सद्भाव हो जाता है। इस महापुण्य के बल से इनका अहम्-अज्ञान-अस्मिता-जिसका प्रलय सर्वथा असंभव ही है वे नष्ट हो जाते हैं।

सहजानंद स्वामी जी की पांचवी पीढ़ी में ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज एक ऐसी विभूति थे। वे ऐसे समर्थ थे कि यदि वे चाहते तो हजारों यूरोपियनों को दीक्षा देकर समर्थ बना देते, किन्तु.... इन्होंने साधुता दी, प्रभुत्व दिया, अपने गुण दिये, सरलता दी, निर्दोषभाव दिया और प्रभुमय व्यवहार दिया। ब्रह्मनियंत्रित एक सुन्दर समाज खड़ा कर दिया। जैसे दीपक से दीपक जलता रहता है, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामी जी, प.पू. महंतस्वामी जी और प.पू. प्रमुखस्वामी जी जैसी परम एकांतिक विभूतियां विरासत में दी.....! अपने अंतर्धान होने से पहले लक्षण द्वारा इनका परिचय करवा के इस प्रकार भावी ज्योतिर्धरों के प्रकटीकरण के लिये दिव्य भूमिका भी निश्चित कर दी। ये है योगीजी महाराज की विशेषता..... स्वामी सहजानंदजी की विशेषता! इन विभूति पुरुषों में अखंड सद्भाव युक्त असाधारण प्रीति सुदीर्घ कर के इनके अभिप्राय के जानने वाले भगवदीयों में समतापूर्वक सद्भाव रख कर जो खुले दिल से जीने लगे हैं, इनमें आज आध्यात्मिक परिणाम भी दिखाई देते हैं।

ऐसे सर्वोत्कृष्ट अवतार पुरुष-पुराण पुरुष सहजानंद स्वामी जी का संदेश-सदा सर्वथा सुखी होने का संदेश उत्तर भारत में भी सब मनुष्यों को प्राप्त हो सके इस हेतु बम्बई में डाभोलकर रोड पर 1948 में ब्रह्मस्वरूप स्वामी श्री शास्त्रीजी महाराज ने अपनी एवं गुरुवर्य योगीजी महाराज को मध्य में सत्संगीबंधु श्री गुलजारीलाल नन्दा जी को बिठाकर महाप्रभु स्वामी सहजानंदजी की मूर्ति भेंट देकर आशीर्वाद दिया था कि महाराज जैसे हमारी बात मानते हैं, वैसे ही इस समागम के फलस्वरूप आप की बात भी अवश्य सुनेंगे। इस प्रकार दिल्ली और पंजाब में स्वामिनारायण भगवान के संदेश का प्रचार-प्रसार इनके द्वारा हो और स्वंय सत्संग में दृढ़ रहकर अन्य लोगों को भी सुदृढ़ करे ऐसी अभिलाषा से इनको दिल्ली भेजे थे। संयोगवश इस में अत्यधिक समय निकल गया। लेकिन ये विभूति पुरुषों का संकल्प अब मूर्त्त हो रहा है। प.पू. काकाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामी जी और प.पू. पप्पाजी की प्रेरणा से दिल्ली में स्वामिनारायण का अक्षरपुरुषोत्तम का सनातन, सर्वोपरी, सचेतन गुणातीतज्ञान का प्रवर्तन करता हुआ जीवंत और जाग्रत सक्रिय केन्द्र साकार हुआ है। भुज से सूरत तक के प्रदेश में ही सुख्यात स्वामिनारायण संप्रदाय और इसका सर्वोत्तम दर्शन जो आज तक अपनी ही कुछ संकुचित भावनाओं के कारण गुजरात के बाहर प्रचलित नहीं हो पाया था, वह अब दिल्ली के इस केन्द्र के माध्यम से दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर भारत में व्यापक बन रहा है। प.पू. काकाजी के अथक परिश्रम से यहां एक नूतन समाज का नवसर्जन भी हुआ है।

कोटि रुपये खर्च करते हुए भी जो संस्कार-परिवारभाव-प्रेमभाव-मैत्रीभाव-सुहृदभाव-एकत्वभाव सिद्ध न हो सके इनका यहां सिंचन हो रहा है। इसकी प्रतीति भी सर्व श्री चंदुलालभाई झवेरी, हिम्मतभाई ठक्कर, प्रफुल्लभाई झवेरी, शरदभाई शाह, जयंतीभाई देसाई, विमलभाई दवे, लल्लुभाई गोहिल आदि गुजराती समाज के प्रमुख कार्यकर्त्ता; गुर्जरभारती के संपादक श्री महेन्द्रभाई दवे; पावागढ़ी परिवार, रमणभाई पकाई, हसमुखभाई जानी, मणिभाई पटेल, आर.के. पटेल, नरोत्तमभाई पटेल, कांतिलाल देसाई, नवीनचंद्र शाह, विनोदभाई झोंसा आदि

भावुक और बिन गुजराती समाज के सर्वश्री प्रेमनाथ सरीन, रामप्रकाश मोंगा, सिंगल साहब, मोहनलाल, विनायकजी मुलगुण्ड साहब, वकील साहब श्री हरिश्चंद्र जी, जयस्वाल परिवार, हंसराज जी, केशवानी परिवार, नेमसिंह, परसादीलाल आदि को हुई है।

इन सब के आग्रह के वश होकर गुजराती समाज के अतिरिक्त अन्य भाषाभाषी लोगों को भी समझ आ सके इस हेतु आज ता. 12 जून–प.पू. काकाजी के प्राकट्य दिन सत्संग की ये नई पत्रिका प्रस्तुत की जा रही है। प्रति मास की 12वीं तारीख को यह पत्रिका प्रकाशित होती रहेगी।

वास्तव में परमात्मा का असली ज्ञान और रहस्य परमात्मा ही जानता है; क्योंकि वह अच्युत है, अप्रमेय है, अनन्त है। अतः परमात्मा के अवतार और परमात्मा को मिले हुए संत के समागम एवं सेवा से ही आत्मा और परमात्मा का ज्ञान संभव हो सकता है। हां, अपनी-अपनी कल्पना और अनुभवों के अनुसार आंशिक सत्य प्राप्त हो सकता है, किन्तु आत्मा-परमात्मा के सम्यक् दर्शन का रहस्य तो उपर्युक्त विभूति पुरुषों और अवतार पुरुषों से ही पूर्ण रूप से प्राप्त हो सकता है। अतः प.पू. हरिप्रसादस्वामी जी, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी जैसी भगवत्सवरूप विभूतियों द्वारा अपना मूलस्वरूप का अपनी मौलिक चेतना का -'अहं ब्रह्मास्मि' 'तत्त्वमसि' जैसे महावाक्यों का ज्ञान त्यागी या गृहस्थ सबको सुलभ हो– सरल हो इस हेतु हमारा यह अल्पप्रयास है।

इसके अतिरिक्त स्वामिनारायण भगवान ने 'वचनामृत' ग्रंथ में–

1. संप्रदाय की रीति,
2. गुरुपरम्परा,
3. सम्प्रदाय के प्रमाणरूप शास्त्र
4. आश्रित सत्संगी आदि के नियम और
5. अपने ईष्टदेव के परोक्ष और प्रत्यक्ष स्वरूप

– यह पांच वार्ताओं का निश्चयरूप से परिचय करने को कहा है। अतः इस पत्रिका में भागवत्धर्म की–सनातन धर्म की रीति, नीति, स्थिति एवं महिमा ऐसे अवतारपुरुषों के जीवन चरित्र, इनके जीवन के बहुमूल्य प्रसंग एवं इनके द्वारा दिये गये आदेश-उपदेश और रहस्य सादी और सरल भाषा में रखने का हमारा प्रयास रहेगा।

सब शास्त्रों एवं संप्रदाय द्वारा आजमाया हुआ सन्तमार्ग ही राजमार्ग है। अतः ज्ञाति, जाति, सम्प्रदाय, धर्म आदि किसी प्रकार के भेदभाव बिना श्रेयार्थी मुमुक्षुगण दिल की सच्चाई से श्रद्धापूर्वक सन्त-सद्गुरु का सेवन करने की सर्वदेशीय ज्ञानदृष्टि को पाकर दैवीगुण उपलब्ध करें–चिरंजीव सुख, शांति, और आनन्द प्राप्त करें यही इस पत्रिका का प्रमुख हेतु और भावना है। किसी भी प्रकार का कटाक्ष या इस कारण का इंगित जो संतपुरुष को पसंद नहीं है इन्हें इस पत्रिका में स्थान नहीं दिया जायेगा। इस सिद्धान्त पर कार्य करने वाले भिन्न-भिन्न मण्डल और केन्द्रों की ओर से जो विविध समाचार प्राप्त होंगे उनके लिये यहां निश्चित स्थान है।

हमें विश्वास है कि आप सब प्रेम से इस पत्रिका को स्वीकार करेंगे-सहकार देंगे, इससे लाभान्वित होंगे और अन्य को लाभान्वित करायेंगे।

तो आइए-सानंद आइए, हम सब इकट्ठे मिलकर सन्त के माध्यम से रसधनपूर्ति का-दिव्यजीवन का परमानन्द प्राप्त करें।

★ ★ ★

Supramental Reality in humanly manifested form always remains as real Sadguru. As such Divinity is within you and without. Merely as a child awaken Him and do all your actions after chanting and glorifying His name with the remembrance of such Realised Sadguru.

The ultimate Result is mental peace, joy, happiness, power and liberation.

May God and Sadguru's Grace and blessings be ever with you.

साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,
ए-103, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 से प्रकाशित।
मुद्रण स्थानः ठक्कर प्रिंटिंग प्रेस, 2588, बस्ती पंजाबियान, सब्जी मण्डी, दिल्ली-110077